पाठ–14

मेरी भी आभा है इसमें

–नागार्जुन

पाठ की संरचना

14.1 आइए शुरू करें
14.2 उद्देश्य
14.3 मूल-पाठ
14.4 आइए समझें
14.5 भाषा-शैली

14.1 आइये शुरू करें

मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपनी उपस्थिति सभी जगहों पर चाहता है। पेड़, पौधे, फसल, फूल आदि स्वयं अपने श्रम से सृजित करना चाहता है। ऐसी सोच रखने वाला मनुष्य संसार की हर छोटी-बड़ी घटनाओं से अपने आप को जोड़ता है, उसमें अपनी छवि तलाश करता है। 'मेरी भी आभा है इसमें' शीर्षक कविता में कवि नागार्जुन प्रकृति के कण-कण में अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं।

14.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद

- कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कर सकेंगे,
- कविता के माध्यम से प्रकृति को देखने की नयी दृष्टि प्राप्त कर सकेंगे,
- कविता की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे,
- कवि का संक्षिप्त परिचय दे सकेंगे।

क्रियाकलाप

प्रकृति से संबंधित बहुत सी कविताएँ लिखी गई हैं। आप कुछ वैसी कविताओं का संग्रह करें जिसमें प्रकृति का वर्णन हो।

14.3 मूल-पाठ

नये गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है।
मेरी भी आभा है इसमें
भीनी-भीनी खुशबू वाले
रंग-विरंगे
यह जो इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था

पकी-सुनहली फसलों से जो
अबकी यह खलिहान भर गया
मेरी रग-रग में शोणित की बूँदे इसमें
मुस्काती हैं

नये गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें

बोध प्रश्न

1. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा करें:-
   (क) मेरी भी .....है इसमें
   (ख) भीनी-भीनी .....वाले
2. कवि के प्राणों ने किस चीज को नहलाया था:-
   (क) सूर्य (ख) चंद्रमा
   (ग) फूलों (घ) इनमें से कोई नहीं

अंश-1

नये गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है